प्रबुद्ध रौहिणेय—समीक्षात्मक अनुशीलन

—डॉ० रामजी उपाध्याय

छः अंकों में प्रबुद्ध रौहिणेय नामक प्रकरण के रचयिता रामभद्र मुनि हैं। रामभद्र के गुरु जयप्रभ सूरी वादिदेव के शिष्य थे। इनका समय ईसा की बारहवीं शती का अन्तिम भाग है।

नाट्यकथा के अनुसार रौहिणेय के पिता लोहखुर नामक डाकू ने मरते समय उसे शिक्षा दी कि महावीर स्वामी की वाणी कान में कहीं न पड़ जाये—इसका प्रयत्न करना, क्योंकि वह वाणी हमारे कुलाचार का विध्वंस कर देने वाली है। एक दिन रौहिणेय ने देखा कि वसन्तोत्सव के अवसर पर नागरिक प्रेयसियों के साथ मकरन्दोद्यान में क्रीड़ा कर रहे हैं। उसने निर्णय किया कि सर्वाधिक सुन्दरी का अपहरण करूँ, क्योंकि—

वणिग्वेश्या कविर्भट्टस्तस्करः कितवो द्विजः।
यत्रापूर्वोऽर्थलाभो न मन्यते तदहर्वृथा ॥१.१३॥

उसने छिपकर किसी धनी की रमणीयतम सुन्दरी को अपने उपपति से बातें करते देखा। सुन्दरी मदनवती अपने निजी भाग्य से परम सन्तुष्ट थी। उसका उपपति उसके लिए निरवग्रह सौभाग्य की सृष्टि कर रहा था। नायिका ने नायक से कहा कि पहले पुष्पावचय कर लें और फिर शीतल कदली गृह में क्रीड़ारस का आनन्द लें। उन दोनों में स्पर्धा हुई कि हम अलग-अलग दिशाओं में जाकर पुष्पावचय करते हुए देखें कि कौन अधिक फूल तोड़ लाता है। रौहिणेय ने नायिका को फूल तोड़ते हुए देखा—

पुष्पार्थं प्रहिते भुजेऽनिलचलन्नीलाङ्शुकाविष्कृतः
सल्लावण्यलसत्प्रभापरिधिभिर्दोर्मूलकूलङ्कषः।
ईषन्मेघविमुक्तविस्फुरदुरुज्योत्स्नाभरभ्राजित—
व्योमाभोगमृगाङ्कमण्डलकलां रोहत्यमुष्याः स्तनः ॥१.२६॥

रौहिणेय ने उपपति के दूर चले जाने पर नायिका का अपहरण करने की योजना बनाई और अपने साथी शबर से कहा कि इसके उपपति को किसी बहाने रोककर फिर आना। नायिका ने डाकू रौहिणेय का उससे परिचय पाकर शोर मचाना चाहा। डाकू ने कहा कि यदि ऐसा किया तो तुम्हारा सिर काट डालूँगा।[1] उसके बाहर निकलने पर वह उसे कन्धे पर उठाकर भाग निकला कि उसे यथाशीघ्र पर्वत के गह्वर में प्रवेश कराऊं।

उपपति ने लौटकर ढूंढ़ने पर भी जब नायिका को नहीं पाया तो उसे रौहिणेय के सेवक शबर से पूछने पर ज्ञात हुआ कि परिजनों से घिरा कोई क्रोधी पुरुष वृक्ष की ओट में निकट ही कुछ मन्त्रणा कर रहा है। उपपति ने समझा कि वह नायिका का पति है और मुझे मार डालने की योजना बना रहा है। वह डर कर भाग गया।

दूसरे दिन राजगृह में किसी का अपहरण करना था। रौहिणेय के चर शबर ने पहले से ही ज्ञात कर लिया था कि कहां, क्या और कौन है। रौहिणेय भी घटनास्थली एक बार देख चुका था। सुभद्र सेठ, मनोरमा सेठानी और मनोरथ वर हैं।

रात्रि के समय रौहिणेय शबर के साथ सेठ के घर के समीप पहुँचा। वर-वधू गृह प्रवेश के मुहूर्त्त की प्रतीक्षा में थे। गन्धर्व-वर्धापनक उत्सव में सोत्साह लगे हुये थे। पहले शबर उनके बीच जाकर नाचने लगा। सेठानी घर के भीतर सज्जा करने चली गई। फिर वामनिका का सतूर्य नृत्त हुआ। अन्त में रौहिणेय स्त्री बनकर आया। वह[2] वेशभूषा से सेठानी के समान था। उसने वर से

१. त्वरितमग्रतो भव। नो चेदन यासिधेनुकया शिरः कष्मांडपातं पातयिष्यामि।

२. कुसुममुकुटोपशोभितापट्टांशुककृतनीरङ्गकानना कुंकमस्तबकाञ्चितललाटा युवतिः कक्षान्तरेऽलक्षचोरिकासर्पश्च।

कहा कि कन्धे पर बैठो, तुम्हें लेकर नाचूंगी। उसका नृत्य होने लगा। एक अन्य अनुचरी वधू को कंधे पर रखकर नाचने लगी। वामनिका भी शबर के कंधे पर आ बैठी और वह नाचने लगा। उसने गन्धर्वों से कहा कि तारस्वर से वाद्य बजाओ।

ऐसी तुमुल स्वर-लहरी के बीच रौहिणेय ने अपनी कांख से एक चीरिका सर्प गिरा दिया। उसे वास्तविक सर्प समझकर लोग भाग चले। रौहिणेय भी वर को लेकर भागा। थोड़ी दूर पर उसने अपना स्त्रीवेश उतार फेंका। वर उसे देखकर रोने लगा। रौहिणेय ने कहा कि यदि रोते हो तो इसी छुरी से तुम्हारे कान काट लूँगा। वह अपने गिरि-गह्वर की ओर चलता बना।

सेठ ने समझा कि यह सांप ही है। उसकी परीक्षा करने पर ज्ञात हुआ कि वह कृत्रिम है। उसी समय उसे अपने लड़के की चिन्ता हुई। उसे माँ कन्धे पर ले गई होगी। माँ ने कहा मैं तो घर से निकली ही नहीं। तब ज्ञात हुआ कि सेठ के लड़के का अपहरण हो गया है।

उस समय मगध का राजा श्रेणिक राजगृह में विराजमान था। नगर के सभी महाजन उपायन लेकर राजा से मिलने आये। उन्होंने पूछने पर बताया कि—

दग्धश्चौरहिमेन पौरमलयो निन्द्यां दशां लम्भितः ।।३.२३।।

चोर सुन्दर पुरुष, स्त्री, पशु और धन-दौलत का अपहरण करता है। राजा ने आरक्षक को बुलवाया। उसने कहा कि चोर को पकड़ने में मेरे सारे प्रयास व्यर्थ गये। फिर अभय कुमार मन्त्री आये। राजा ने मन्त्री को भी डांटा और कहा कि मैं स्वयं चोर को दण्ड दूंगा। मन्त्री ने कहा कि मैं ही पांच-छः दिनों में चोर को पकड़ लूँगा।

उसी समय राजा को समाचार मिला कि महावीर स्वामी उद्यान में आये हुये हैं। राजा ने अग्र पूजा की सामग्री ली और महावीर का व्याख्यानामृत सुना।

रौहिणेय ने निर्णय किया कि राजा उग्रदण्ड प्रचण्ड है। इससे क्या? मुझे तो आज उसी के घर से स्वर्णराशि चुरानी है।[1]

सन्ध्या होने वाली थी। रौहिणेय ने देखा कि महावीर स्वामी कहीं परिषद् में आये हुये हैं। वह पिता की आज्ञानुसार दोनों हाथों से दोनों कान बन्द कर चलने लगा। तभी पैर में कांटा चुभ गया। वह कांटे को हाथ से निकाल नहीं सकता था, क्योंकि तभी कानों में महावीर की वाणी प्रवेश कर जाती। फिर भी कान से हाथ हटाकर कांटा निकालना पड़ा। उसके कानों में महावीर की देवलक्षण वाणी पड़ी।[2]

रात्रि में राजदण्ड उस व्यक्ति के लिए घोषित हुआ, जो एक पहर रात के पश्चात् बाहर निकले। आधी रात का समय होने को आया। यही समय रौहिणेय के चोरी करने का था। वह आया और राजप्रासाद के निकट पहुँच गया। वहाँ प्रहरी के बुलाने पर वह चण्डिकायतन में घुस गया। नगर-रक्षकों ने चण्डी मन्दिर को घेर लिया। वह कोने में जा छिपा और हाथ में छुरी लेकर आरक्षकों के बीच से भाग निकला। उसके पीछे लोग दौड़े। उसने प्राकार का लङ्घन किया, पर कहीं जाल में फँस गया और पकड़ लिया गया। दूसरे दिन रौहिणेय राजा के समक्ष लाया गया तो उसने उसे सूली चढ़ाने का दण्ड दिया। फिर तो—

चूर्णेनाप्रयवीनभूषिततनुः कृष्णाम्बुलिप्ताननः
प्रेंखत्केशभरः कुकाहलखाहूतप्रजावेष्टितः।
आरूढः खरमेषरक्तकुसुमस्त्रक्छोभितोरः स्थिति—
र्जातस्तत्खलु कालरात्रिवनिताभिष्वङ्गरंगोत्सुकः ।।५.१५।।

---

१. नाद्यासमाद्यदि भूपतेर्भवनतः प्राज्यं हिरण्यं हरे।
तन्मे लोहखुरः पिता परमतः स्वर्गस्थितो लज्जते ।।४.७।।

२. निःस्वेदाङ्गा श्रमविरहिता नीरुजोऽम्लानमाल्या
मत्पृष्टोर्वीवलय चलना निर्निमेषाक्षिरम्या।
शश्वद्भोगेऽप्यमलवसना विस्रगन्धप्रमुक्ता—
श्चिन्तामात्रोपजनितमनोवाञ्छितार्थाः सुराः स्युः ।।४.६।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभयकुमार ने कहा कि इसे सूली पर चढ़ाना ठीक दण्ड नहीं। इसके पास चोरी का सामान नहीं पकड़ा गया। वह गधे से उतारा गया। उससे पूछताछ हुई। उसने बताया कि मैं शालिग्राम का रहने वाला दुर्गचण्ड किसान हूँ। काम से यहां आया था। नगर में किसी सम्बन्धी के न होने से चण्डिकायतन में सोया था। तभी आरक्षकों द्वारा घेर लिया गया और मुझे प्राकार लाँघना पड़ा। वहीं पकड़ लिया गया। एक दूत शालिग्राम भेजा गया। वहां के ग्रामवासियों ने कहा कि दुर्गचण्ड यहां रहता है। आज काम से बाहर गया है। उस दिन रौहिणेय का न्याय टल गया।

अभयकुमार ने एक नाटक का आयोजन कराया। पहले तो रौहिणेय को सुरापान कराकर प्रमत्त कर दिया गया और उसके चारों ओर ऐसी व्यवस्था की गई कि वह स्वर्गलोक में है। नाट्याचार्य भरत के तत्त्वावधान में वेश्याङ्गनायें अप्सराओं की भूमिका में थीं। चन्द्रलेखा और वसन्तलेखा रौहिणेय के दाईं ओर बैठीं, और ज्योतिप्रभा और विद्युत्प्रभा उसके बाईं ओर बैठीं। शृङ्गारवती नृत्य करने लगी। गन्धर्वों ने सङ्गीत प्रस्तुत किया। तब तक रौहिणेय चेतना प्राप्त कर चुका था। सभी अभिनेता उसे चेतनापूर्ण देख चिल्ला उठे—आज देवलोक धन्य है कि स्वामी-रहित हम लोगों को आप स्वामी प्राप्त हुये।[1] चन्द्र लेखा[2] और विद्युत्प्रभा[3] ने भी ऐसे ही विचार व्यक्त किये।

तभी प्रतिहार ने आकर कहा कि तुम लोगों ने स्वर्लोकाचार किये बिना ही अपना कौशल दिखाना आरम्भ कर दिया। पूछने पर बताया कि जो कोई यहां नया देवता बनता है, वह अपने पूर्व जन्म सुकृत-दुष्कृत को पहले बताता है। उसके पश्चात् वह स्वर्गोचित भोगों का अधिकारी होता है। उसने रौहिणेय से कहा कि मुझे इन्द्र ने भेजा है। आप अपने मानव जन्म के उपार्जित शुभाशुभ का विवरण दें।

रौहिणेय ने सारी परिस्थिति भांप ली कि मेरे चारों ओर के लोग देव नहीं हैं क्योंकि उन्हें पसीना आ रहा है, वे भूतल का स्पर्श कर रहे हैं, उनकी मालायें मुरझा रही हैं। यह सारा कैतव है। उसने मिथ्या उत्तर दिया।[4]

प्रतिहार ने कहा कि ये तो शुभकर्म हैं, अशुभ बतायें।

रौहिणेय ने उत्तर दिया कि दुष्कर्म तो उसके द्वारा कभी किए ही नहीं गए।[5]

प्रतिहारी ने कहा कि स्वभावतः मनुष्य परस्त्री संग, परधन हरण, जुआ आदि दुष्प्रवृत्तियों से ग्रस्त होता है। आपने इनमें से क्या किया? रौहिणेय ने उत्तर दिया कि यह तो मेरी स्वर्णगति से ही स्पष्ट है कि मैं इन दुष्प्रवृत्तियों से सर्वथा दूर रहा हूँ।

तभी राजा श्रेणिक और अमात्य अभय प्रकट हुए। प्रतिहारी की बात सुनकर अभयकुमार ने राजा से कहा कि इसको दण्ड नहीं दिया जा सकता। यह डाकू है। पर प्रमाणाभाव के कारण दण्ड देना राजनीति के विरुद्ध है। उसे अभय प्रदान करके वास्तविकता पूछकर छोड़ दिया जाय[6]।

---

१. अस्मिन् महाविमाने त्वमुत्पन्नास्त्रिदशोऽधुना।
अस्माकं स्वामिभूतोऽसि त्वदीयाः किङ्करात्रयम् ॥६.५॥

२. यज्जातस्त्व मञ्जुमञ्जुलमहो अस्माकं नु प्राणप्रियः ॥६.१३॥

३. जाता ते दर्शनात् सुभग समधिक कामदुः स्थावस्था ॥६.१६॥

४. दत्तं पात्रेषु दानं नयनिचितधनैश्चक्रिरे शैलकल्पा—
न्युच्चैश्चैत्यानि चित्राः शिवसुखफलदाः कल्पितास्तीर्थयात्राः।
चक्रे सेवा गुरूणामनुपमविधिना ताः सपर्या जिनानां
बिम्बानि स्थापितानि प्रतिकलममलं ध्यातमर्हद्वचश्च | ६.१९ |

५. दुश्चरित्रं मया क्वापि कदाचिदपि नो कृतम् | ६.२० |

६. प्रपञ्चचतुरोऽप्युच्चैरहमेतेन वञ्चितः
वञ्च्यन्ते वञ्चनादक्षैर्दक्षा अपि कदाचन ॥६.२४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजाज्ञा से सभी लोग यहाँ से चले गए। केवल राजा और अभय कुमार की उपस्थिति में रौहिणेय को लाया गया। राजा ने कहा कि रौहिणेय, तुम्हारे सब अपराध मैंने क्षमा किये, पर तुम निःशङ्क होकर बताओ कि यह सब तुमने कैसे किया ? डाकू ने कहा—

निःशेषमेतन्मुषितंपत्तनं भवतो मया

नान्वेषणीयः कोऽप्यन्यस्तस्करः पृथिवीपते ।६.२८।

आज जो कुछ किया उसमें हेतु महावीर स्वामी हैं—

वन्द्यो वीरजिनः कृपैकवसतिस्तत्र हेतुः परः ।६.३०।

डाकू ने अपनी बात बताई कि महावीर की वाणी कान में न पड़ जाये, अतः उसने हाथ से कान बन्द कर लिये, पर कांटा निकालने के लिये हाथ कान से हटाना पड़ा तो हमें देवलक्षण सुनाई पड़ा, जिसके आधार पर मैंने जान लिया कि मेरे चारों ओर जो देवलोक बना था, वह वास्तविक नहीं था। मैंने इतने समय तक पिता की बात मानकर महावीर की वाणी नहीं सुनी। वस्तुतः—

इहापास्याम्राणि प्रवररसपूर्णानि तदहो

कृता काकेनेव प्रकटकटुनिम्बे रसिकता ।६.३४।

अब मैं महावीर के चरण कमलों की सेवा में रहूँगा। उसने मंत्री से कहा कि मेरे द्वारा चुरायी गयी सभी वस्तुयें दे दी जायें। रौहिणेय उन सबको चण्डिकायतन में ले गया वहां उसने उस कपाट को खोला, जिस पर कात्यायनी का रूप उत्कीर्ण था। वहां मदनवती और मनोरथकुमार तथा अतुलित स्वर्णराशि मिली। सबको उनकी चोरित वस्तुयें मिल गयीं। राजा से अनुमति मांगने पर रौहिणेय का अभिनन्दन किया गया।[1]

प्रबुद्ध रौहिणेय का कथानक संस्कृत नाट्यसाहित्य में अनूठा ही है। इस डाकू को प्रकरण का नायक बनाकर उसके चारों ओर की नृत्य-सङ्गीत की दुनियाँ में संस्कृत का कोई रूपक इतना मनोरञ्जन नहीं करा सका है।

नाटक में कूट घटनाओं का संभार है। इस युग में अन्य कई नाटकों में कूट घटनाओं और कूट पुरुषों की प्रचुरता मिलती है। सेठ ने डाकू को पकड़ने के लिए अनेकों कापटिक कर्मों की योजना बनाई।[2]

लेखक जैन है किन्तु उसने पूरे कथानक में कहीं भी जैनधर्म का प्रचार नहीं किया। गौण रूप से जैनधर्म की उत्तमता प्रतिपादित करने से इस नाटक की कलात्मकता अक्षुण्ण रह सकी है।

इस नाटक में देवभूमि से लेकर गिरि गुफा तक का दृश्य तथा न्यायालय, वसन्तोत्सव, समवसरण आदि की प्रवृत्तियों का दृश्य वैचित्र्यपूर्ण है।

रामभद्र की प्रसादगुणोत्पन्न शैली सानुप्रास-संगीत निर्भर है।[3]

कवि की गद्य शैली भी थिरकती हुई नर्तनमयी प्रतीत होती है।[4]

इनमें स्वरों का अनुप्रास उल्लेखनीय है।

---

१. त्वं धन्यः सुकृती त्वमद्भुतगुणस्त्वं विश्वविश्वोत्तम—
स्त्वं श्लाघ्योऽखिलकल्मषं च भवता प्रक्षालितं चौर्यजम्।
पुण्यैः सर्वजनीनतापरिगतौ यौ भूर्भुवःस्वोऽर्चितौ
यस्तौ वीरजिनेश्वरस्य चरणौ लीनः शरण्यो भवान्।६.४।

२. तैस्तैर्दुर्घटकूटकोटिघटनैस्तं घट्टयिष्ये तथा | ३.२२ |

३. क्वचिन्मल्लीवल्लीतरल मुकुलोद्भासितवना
क्वचित् पुष्पामोदभ्रमदलिकुलाबद्धवलया।
क्वचिन्मत्तक्रीडत् परभृतवधूध्वानसुभगा
क्वचित् कूजत्पारापतविततलीला सुललिता | १.६ |

४. ध्वस्तसमस्तशोकाः सततविहितबिब्बोकाः सफलीकृत जीवलोकाः क्रीडन्त्यमी लोकाः |

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्रस्तुत प्रशंसा के कतिपय वाक्य भाव प्रवणता की दृष्टि से सटीक हैं—

१. मरुमण्डली तृष्णावत्पथिकस्य वक्त्रविस्तारितमेवाञ्जलिपेयं, पुनरन्तरा पिशाचेन पीतम् ।

२. अहो खलकुट्टया गुडेन सार्धं प्रतिस्पर्धा ।

३. पिचुमन्दकन्दल्या रसालरसस्य च कीदृशस्त्वया संयोगः ।
श्लेष्मे विकारा अपि यद्यसमदारम्भाणां भङ्गमाधास्यन्ति ।

कहीं व्यञ्जना का प्रयोग हास्यरसोचित है-

यत्र तादृशाः सुरूपा नृत्यकलाकुलास्तत्र किमस्मादृशां नर्तितुं योग्यं ।

हास्य रस के अन्य प्रयोग द्वितीय अंक में मनोरञ्जक हैं। इस अंक में हास्य का परम प्रकर्ष है। कवि की प्रतिभा प्रस्तुत परम्परित रूपक से स्पष्ट है—

स्थाले स्मेरसरोरुहे हिमकणान् शुभ्रान्निधायाक्षतां—
स्तद्रेणुं मलयोद्भवं मधुकरान् दूर्वाप्रवालावलीः ।
हंसी सद्धिकेसरोत्करमपि प्रेङ्खच्छिखा दीपिकाः
सज्जाभून्नलिनी रवे रर्चयितुं प्रातस्त्यमारात्रिकम् ॥३.२॥

चरित नायक के चरित्र का विकास नाट्यकला की दृष्टि से विशेष महत्त्वपूर्ण है। महावीर की वाणी सुनने के पश्चात् रौहिणेय का चरित्र सद्वृत्तियों से आपूरित होता है। डाकू होने पर भी नायक का व्यक्तित्व कुछ-कुछ कवियों जैसा है। वासन्तिक सौरभ को देखकर उसका हृदय नाच उठता है और वह कह उठता है—

केचिद् वेल्लिवल्लभाभुजलताश्लेषोल्लसन्मन्मथाः
केचित् प्रीतिरस प्ररूढपुलका कुर्वन्ति गीतध्वनिम् ।
केचित् कामित नायिकाधर दलं प्रेम्णा पिबन्त्यादरात्
किंचित कूपित लोललोचनपुराः पद्मं द्विरेफा इव ॥१.१०॥

प्रबुद्ध रौहिणेय में एक कूटघटनात्मक गर्भनाटक का समावेश छठे अंक में किया गया है। इस युग में नाटक के किसी अंक में छोटा-सा उपरूपक समाविष्ट करने की रीति कतिपय कवियों ने अपनाई है।

किसी पात्र का छिपकर या अकेले ही रहकर रङ्गमञ्च पर दूसरों के विषय में अपनी भावनायें प्रकट करना नाटकीय दृष्टि से रुचिकर होता है, क्योंकि ऐसी स्थिति में किसी अन्य पात्र की उपस्थिति के कारण गोपनीयता की सीमा नहीं रह जाती। रौहिणेय ऐसी स्थिति में प्रच्छन्न रहकर मदनवती को देखकर तर्क करता है—

किं शृङ्गारमयी किमु स्मरमयी किं हर्षलक्ष्मीमयी ।

रामभद्र ने इस नाटक में नृत्य, गीत और वाद्य का लोकोचित लम्बा कार्यक्रम प्रासंगिक रूप से द्वितीय अंक में प्रस्तुत कराया है।

प्रबुद्ध रौहिणेय में नाट्यालंकारों का विशद सन्निवेश सफल है। तृतीय अंक का उद्देश्य ही नाट्यालंकार-प्रस्तुति है। इस नाटक के आद्यन्त अंकों में दृश्य सामग्री है, सूच्य अपवाद रूप से अंक में गर्भित हैं।

डाकू-क्षेत्र में सद्वृत्तपरायण सन्तों के आने-जाने से बहुत-से डाकुओं की मनोवृत्ति में परिवर्तन हो सकता है। १९७२ ई० में जयप्रकाश नारायण के प्रयास से डाकुओं का हृदय-परिवर्तन हुआ है, उसका प्रबुद्ध रौहिणेय पूर्वरूप प्रस्तुत करता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org